नवें दशकोत्तर हिन्दी साहित्य : चिन्तन के विविध आयाम

डॉ. महेन्द्र रघुवंशी
डॉ. गिरीश महाजन
डॉ. अशोक पवार
डॉ. सुभाष ठाकरे
डॉ. गोकुलदास ठाकरे

अथर्व

Scanned with CamScanner

- नवे दशकोत्तर उपन्यासों में स्त्री विमर्श ०९३
  - प्रा.डॉ. मृदुला वर्मा
- महाश्वेता देवी का उपन्यास 'लालगढ की माँ' ०९८
  - प्रा.डॉ. अशोक शामराव मराठे
- बटुक चतुर्वेदी की साहित्यरचनाओं में निहित सामाजिक चेतना में व्यंग्य १०४
  - प्रा.डॉ. उमेश अशोक शिंदे
- नौवें दशक के कवि मनोज सोनकर : सामाजिक चिंतन १०८
  - प्रा. मनोहर एच. पाटील
- नवम् दशकोत्तर साहित्य में दलित विमर्श ११२
  (हिन्दी दलित साहित्य की उपन्यास, कहानी, कविता तथा आत्मकथा विधाओं के विशेष संदर्भ में)
  - प्रा.डॉ. महेन्द्रकुमार रा. वाढे
- 'कितने पाकिस्तान?' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ ११७
  - दत्तात्रय दशरथ पटेल
  रामदरश मिश्र की कहानियों में स्त्री विमर्श १२३
  - डॉ. अमृत खाडपे
- ओमप्रकाश वाल्मीकि के कहानियों में दलित जीवन १३०
  - डॉ. सुब्राव नामदेव जाधव
- 'काला पहाड' उपन्यास में आदिवासी विमर्श १३४
  - प्रा. व्ही. जी. राठोड
- प्रभा खेतान का उपन्यास 'पीली आँधी' में नारी-विमर्श १३७
  - प्रा. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
- नवे दशकोत्तर उपन्यासों में दलित विमर्श : 'नरक कुंड में बास' के विशेष संदर्भ में... ..... १४२
  - डॉ. पिरु आर. गवळी
- दलित साहित्य की सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टि और ओमप्रकाश वाल्मीकि का काव्य १४८
  - निलेश प्रकाश भारस्कर
- 'नया ब्राह्मण' में अभिव्यक्त दलित समाज, आंतरिक अंतर्विरोध और उसकी समस्याएँ १५२
  - प्रेम कुमार
- घुसपैठिये : जीवन के भीतर घुसपैठ से मुक्ति की आकांक्षा १५९
  - पूनम कुमारी
- 'छू नहीं सकता' नाटक में अभिव्यक्त सामाजिक विसंगति १६३
  - चेतन सिंह
- नवें दशकोत्तर उपन्यासों में आदिवासी विमर्श १६८
  - निशान्त मिश्रा

Scanned with CamScanner

प्रभा खेतान का उपन्यास 'पीली आँधी' में नारी-विमर्श

– प्रा. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय
यावल, तहसिल यावल, जिला जलगांव

समकालीन उपन्यास साहित्य में महिला लेखिकाओं का एक बडा दल उभरकर सामने आया। उन्होंने समकालीन परिवेश में नारी की त्रासदी और विडम्बना, उसकी शोषित स्थिती, उसकी सामाजिक, आर्थिक पराधीनता, परंपराओं से चले आ रहे स्त्री संबंधों, सामंती मूल्यों आदि समस्याओं को तीखे और साहसपूर्ण ढंग से अपनी साहित्यिक कृतियों में समाज के सामने रखना चाहा।

उत्तरशती के कालखंड में महिला लेखिकाओं में मन्नु भंडारी, मृदुला गर्ग, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, ममता कालिया, मंजुल भगत, मालती जोशी, नासिरा शर्मा, मेहरून्निसा परवेज, राजी सेठ, सुर्यबाला, शशिप्रभा शास्त्री, अर्चना वर्मा, और प्रभा खेतान का योगदान सराहनीय रहा है। प्रभा खेतान की उत्तरशती के महिला लेखिकाओं में अहम् भूमिका रही है। प्रभा खेतान का सृजन-साहित्य विविध आयामी है। उनके छ: काव्य संग्रह, आठ उपन्यास, आलोचनात्मक ग्रंथ, अनुवाद, आत्मकथा आदि प्रकाशित हुए है। उनकी सृजन यात्रा काव्य से प्रारंभ हई।

'पीली आँधी' यह उपन्यास सन् १९९७ में प्रकाशित हुआ। जहाँ राजस्थान के मारवाडी समाज की दारूण कथा को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करते हुए पारम्परिक तथा आधुनिक मारवाडी स्त्रियों की पीडा, शोषण, अन्याय तथा उसके संघर्ष एवं विद्रोह को बयान करती है। कथा का आरंभ उस काल से होता है जब भारत में ब्रिटिश शासन था। राजस्थान के मारवाडी वहाँ के राजा-महाराजाओं के अत्याचारों के कारण बंगाल और बिहार की ओर पलायन करके व्यवसाय में सफलता हासिल करते हैं। विवेच्य उपन्यास का केन्द्र बिन्दु सेठ गुरमुखदासँ गटा परिवार है जिसमें तीन पीढियों की जीवन गाथा प्रस्तुत है। उपन्यास की नायिका सोमा मातृत्व की चाह के कारण करोडपति का घर छोडक़र प्रोफेसर सेन के साथ रहती है। स्त्री सोमा जो भाग्यहीन पढी-लिखी आधुनिक नारी है अपनी नपुंसक

Scanned with CamScanner

पति की पीडा दंश पारिवारीक प्रतिष्ठा के लिए झेलती है और अंत में परंपरागत नारी-संहिता के नियमों को गलत बताते हुए विद्रोह कर स्त्री शक्ति का परिचय देती है। संक्षेप में 'पीली आँधी' में प्रभा ने मारवाडी समाज में स्त्री की व्यथा-कथा तथा उसकी छटपटाहट को वाणी दी है।

यह उपन्यास नारीवादी दृष्टी के कारण उत्पन्न चिन्तन के विविध परंपरागत तथा आधुनिक आयामों तथा स्त्री पुरुष संबंधों एवं परिवर्तित सामाजिक मूल्यों की चर्चा की गयी है। प्रभा खेतान आर्थिक स्वतंत्रता को अपने जीवन की पहली शर्त मानती हैं। लेकिन उनके इस उपन्यास की नायिका सोमा आर्थिक पक्ष को उतना महत्व न देते हुए मातृत्व के लिए अर्थ को छोंड.देती है। कुल तीन पीढ़ियों की स्त्रियों की दास्तान है (चाची, ताई और सोमा)। परंपरागत तथा आधुनिक स्त्री इस उपन्यास की केन्द्र बिन्दु है। डॉ. देवकृष्ण मौर्य के शब्दों- ''इस उपन्यास में तीन-तीन पीढ़ियों की औरतें, जो कोई सौ-डेढ.सौ की यात्रा करते हुए, अपनी-अपनी बात कहते हुए हमारे समाज आज तक पहुँचती हैं। उनके यहाँ पुरानी ... खुद अपने हाथों से अपना सिर काटने वाली औरत है।''[१]

इस उपन्यास में नायिका सोमा भाग्यहीन आधुनिक नारी है जो नपुंसक पति की पीडा का दंश को झेलती हुई अंत में विद्रोह करती हुई संघर्ष करती दिखती है।

लेखिका प्रभा खेतान, जिस सिटी कॉलेज की अध्यापिका थी उसी कॉलेज में ही सुजीत सेन और उनकी पत्नी सोमा भी काम करती थी, प्रभा उन्हें बंगाली परिवार की समझती रही जबकि वह मारवाडी है। सोमा बड़े हिम्मत से बताती कि मैंने दूसरा विवाह किया है। एक मशहूर गँटा परिवार की बहू पति को छोडक़र अपना नया आशियाना बसा लेती है। यहाँ लेखिका ने राजस्थान के मारवाडी समाज की कथा को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करती है।

'मेरी कॉलेज में अग्रेंजी के प्राध्यापक थे सुजीत सेन और उनकी पत्नी थी। सोमा सेन जो सिटी कॉलेज में पढाती थी। हम लोग रहते थे लेक रोड में। बस स्टाप पर मिलते-मिलते मेरी सोमा सेन से दोस्ती हो गई। सोमा मारवाडी है, यह बाद में पता चला। अरे! तब आपने बंगाली से शादी की? छ नहीं, केवल बंगाली से शादी ही नहीं बल्कि प्रोफेसर सेन से मेरा यह दूसरा विवाह है।'' हँसते हुए सोमा ने कहा था।[२]

सोमा के मन में बच्चों की अत्याधिक ललक है। गौतम अपने सुख के लिए हमेशा उसकी इच्छा को नजर-अंदाज करता था। इसके कारण वह गौतम के लिए रोना नहीं चाहती थी। वह अपने-आप सोचती है - ''सोमा तुम्हारे बिना गौतम का क्या होगा? लेकिन मैं ही क्यों घुटती रहूँ? रोती रहूँ? क्या गौतम ने आज तक कभी भी मेरे भीतर समर्पण किया, ताकि मैं माँ बन सकती? समझौता? किस बात

Scanned with CamScanner

का समझौता? उसको संतान नहीं चाहिए, लेकिन मुझे चाहिए? यदि वह गलत नहीं तो मैं भी नहीं। सुख भी तो अर्जित करना पड़ता है।'' संतान लालसा के कारण वह सुजीत सेन की ओर आकर्षित होती है और सुजीत सेन के बच्चे की माँ बनती है।

''विवाह एक संस्था है, रजिस्ट्री के कागजों पर सही किया हुआ नाम है। तलाक की व्यवस्था कानून ने बनाई है। कानून मनूष्य के स्वभाव समझकर ही बनाया जाता है। यदि दो व्यक्ति एक साथ नहीं रह सकते, यदि कहीं कोई गहरी कमी हो, तब इस बंधन को तोडा भी जा सकता है। बल्कि तोड. ही देना चाहिए।''[३]

शादी के सात फेरे के बाद जब स्त्री को पता चलता है कि पति उसे सुख नहीं दे सकता तो वह पति कहलाने योग्य नहीं है। मातृत्व की चाह हर एक स्त्री में प्रतिफलित होती है और इसी चाह की पूर्ती के लिए घर छोड़ना एक स्त्री के जीवन की धैर्य, साहस को प्रकट करती है। साथ ही साथ विवाह संस्था पर प्रश्न चिह्न लगाती हुई स्त्री को मानसिक संघर्ष का विश्लेषण प्रभा खेतान ने किया है।

करवाचौथ का व्रत भारतीय स्त्री के लिए बहुत मायने रखता है। इस उपन्यास की नायिका सोमा करवाचौथ के उपवास में नौकर रामू से चाय बनाकर पी लेती है क्योंकि वह चाय पीने में हर्ज नहीं समझती। आधुनिक स्त्री की आत्मछवि पर प्रभा खेतान ने परिचय दिया है कि किस तरह हमारे परंपरागत रीति-रिवाज एक स्त्री पर आदर्श, नैतिकता और सदाचार के सिद्धान्त उस पर लादे जा रहे हैं। हमारे लिए भारतीय संस्कृति आदर्श है, वह हम में से ज्यादातर लोगों के लिए फाँसी का फन्दा बन गया है। जिसके विरोध में सोमा द्वारा पात्र संघर्ष करती दिखती है। आज की नारी परंपरागत स्त्री छवि के विरुद्ध संघर्ष करती दिखती है।

''उसकी सोच, ठीक है, चौथ का व्रत है अतः नाश्ता नहीं करना है, नहीं करुँगी। लेकिन चाय पीने में क्या हर्ज है?''

''ताईजी, मैं खाए बिना रह जाऊँगी, लेकिन चाय के बिना खाली पेट नहीं रह सकती।'' क्यों नहीं रह सकती? एक दिन चाय नहीं पिओगी तो क्या प्राण निकल जाएंगे?''

स्त्री को यदि पति का प्यार, सम्मान, न मिले तो वह घर छोड़ने के लिए तत्पर रहती है। पति-पत्नी का रिश्ता प्यार की बुनियाद पर टिका है। अगर यह नींव ही डगमगाने लगे तो रिश्ता आगे बढाने से क्या लाभ। आधुनिक स्त्री के लिए अपना आत्मसमान और मातृत्व की चाह जीवन का सबसे परम लक्ष्य होता है। वह बनावटी रिश्तों पर विरामचिन्ह् लगने से पीछे नहीं हटती।

Scanned with CamScanner

"गौतम ! मैंने न कभी तुमसे प्यार किया था और न ही कभी कर सकूँगी।"

सोमा उठकर सीधी खडी हो गई। भय नहीं, कातरता नहीं, उसने बस स्पष्ट शब्दों में कहा – "मैं तलाक चाहती हूँ, गौतम।"

सोमा एक सशक्त महिला के रुप में प्रभा खेतान ने उसकी छवि प्रस्तुत किया है जो बिना डरे अपनी अधिकार की माँग करती है अर्थात रिश्तों का विच्छेद चाहती है। हरिकृष्ण राय के अनुसार – "सोमा जैसी स्त्री जो पन्द्रह वर्षो तक अपने पति के द्वारा प्रताडित अपमानित और लांछित होने के बाद बगावत पर उत्तर आती है और पति परमेश्वर से हमेशा के लिए संबंध विच्छेद कर लेती है।"[४]

सोमा और गौतम का संघर्ष जब समस्त गँटा परिवार के समक्ष आने पर, सभी परिवार के सदस्य सोमा के विरोध में हो जाते हैं। सुजीत के बच्चे का एबांशन करने की सलाह देते हैं, गौतम से स्पष्ट ढंग से कह देती है कि, "जीवन जीने के लिए है, जोखिम उठाने का साहस होना चाहिए।"[५] परिस्थिति प्रतिकूल होने पर भी जीवन का नाम है इस हँसते हुए एवं संघर्षरुपी आशा से जीना चाहिए।

"मैं बस आज में जीती हूँ... और जो मुझे चाहिए..." क्या चाहिए तुम्हें?"

"मैंने कहा ना..."

"क्या हम लोग साथ मिलकर सामना नहीं कर सकते?"[६]

इस प्रकार सोमा परिवार की मान मर्यादा के झूठे बंधन को तोडक़र जीने को सही अर्थ प्रदान करने वाले साथी सुजीत सेन को स्वीकार करती है। मातृत्व की चाह सोमा के जीने की क्षमता को बढाती है। आशारूपी जीवन का मार्ग स्त्री को सफलता प्रदान करती है।

जब एबॉर्शन कराने से इन्कार करती है तब घर के सदस्य सुजीत और सोमा को अलग करने की बात कहते हैं तब सोमा को अलग करने की बात कहते हैं तब सोमा का कथन है – "जब औरत अपने लिए रोती है, कुछ माँगती है तब पागल ही कहलाती है।"

"ताई जी, मैं जीना चाहती हूँ, मेरी अपनी जिंदगी...मेरा बच्चा"

"कोर्ट में लडक़र तुम कुछ नहीं ले सकती, उस रंडुए को तुमसे प्यार नहीं है, उसको तुम्हारा धन चाहिए।"

"तीनों भाइयों में से ही किसी ने कहा था।"

"लेकिन मैंने कब कहा कि मुझे आप लोगों का धन चाहिए? मुझे मेरा बच्चा चाहिए... आँसू भरी आँखों से सोमा ने सबके सामने ममता की आखरी अपील की थी।"[७]

सोमा को अपने मातृत्व की रक्षा करने हेतु वह अपमान की परवाह न करते

Scanned with CamScanner

हुए... ससुराल के लोगों से संघर्ष करती स्त्री के रुप में प्रतिबद्ध किया है। एक स्त्री माँ बनकर ही उसमें संघर्षशील गुण पनपते हैं।

सोमा अपना सर्वस्व छोडक़र सुजीत सेन के घर चली जाती है। उसका कहना – "मैं अनजान नहीं सुजीत। सुख सुविधा धन का महत्व सब कुछ समझती हूँ – लेकिन इनकी जर्तिं किस सीमा तक?

"हाँ गौतम मैं अपने पैरों पर खडी हो सखती हूँ। शायद इस पर से बाहर गौतम तुमको एक हज़ार पये की नौकरी नहीं मिले लेकिन मुझे मिल जाएगी।"

"नहीं, मुझे तुम्हारी दया नहीं चाहिए। दयनीय तो तुम हो गौतम। तुमको न अपने अधिकारों का पता है और न अपने पौरुष का ख्याल। तुमको जिससे जो कहना है। कह लो। मैं सबका सामना कर लूँगी। बोलो और कुछ कहना ?"[१०]

सोमा आत्मनिर्भर जीवन व्यतीत करने वाली स्त्री है। सुजीत के बच्चे की माँ बनकर एक अध्यापिका की नौकरी कर आर्थिक रुप से निर्भर होकर स्वाभिमान से जीवन व्यतीत करती है।

निष्कर्ष

लेखिका ने पीली आँधी की सोमा द्वारा आधुनिक स्त्री सोच एवं संघर्ष को प्रतिस्थापित किया है। प्रो. श्रीराम शर्मा का मंतव्य है– पीली आँधी उपन्यास एक ऐसा उपन्यास है जो शिक्षित महिलाओं के भविष्य का सपना है। "स्त्री अपने संघर्ष के लिए स्त्री मुक्ति की नई भाषा परिभाषा गढती जा रही है।"[११]

संदर्भ

१) 'महिला साहित्य की कतिपय महिलाएँ एवं उनकी रचनाएँ', डॉ. देवकृष्ण मोर्य
२) 'पीली आँधी', प्रभा खेतान, पृ.२५१
३) 'पीली आँधी', प्रभा खेतान, पृ.२४१
४) 'खामोश कबीले की मुख चेतना', हरिकृष्ण राय, वागर्थ (१९७८ जून), पृ.१०८
५) 'पीली आँधी', प्रभा खेतान, पृ.२५६
६) 'पीली आँधी', प्रभा खेतान, पृ.२५५
७) 'पीली आँधी', प्रभा खेतान, पृ.२५७
८) 'पीली आँधी', प्रभा खेतान, पृ.२५८
९) 'पीली आँधी', प्रभा खेतान, पृ.२६१
१०) 'पीली आँधी', प्रभा खेतान, पृ.२६३
११) 'समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध विमर्श', प्रा.श्री.रामशर्मा, पृ.१३७

Scanned with CamScanner